**वाख**

**वाख का सार / प्रतिपाद्य**

इन वाखों में ललद्यद जी ने जाति तथा धर्म में विद्यमान संकीर्णताओं को हटाकर, धार्मिक आडंबरों से मुक्ति पाकर सीधा तथा सरल भक्ति मार्ग अपनाने को कहा है। धार्मिक आडंबरों का विरोध कर उन्होंने प्रेम को महत्व दिया है। वे मानती हैं कि हमें भक्ति का वह मार्ग अपनाना चाहिए, जो जीवन में सहज उतर जाए। योग आदि चीज़ें तो मात्र भ्रम हैं।

**वाख का भाव**

- पहले वाख में कवयित्री कहती हैं कि ईश्वर को पाने के मेरे सारे प्रयास नष्ट हो गए हैं। इस कारण हृदय दुखी हो रहा है।
- दूसरे वाख में कवयित्री कहती हैं कि अहंकार भक्ति के मार्ग में बाधा के समान है। इसे समाप्त कर दें, तो ईश्वर प्राप्त हो जाएँगे।
- तीसरे वाख में कवयित्री कहती हैं कि मैंने बहुत-सा समय योग-साधना में लगा दिया था। बाद में मुझे जाकर पता लगा कि ईश्वर पाने के लिए यह मार्ग उचित नहीं है।
- चौथे वाख में कवयित्री कहती है कि हमें ईश्वर की सच्ची भक्ति करनी चाहिए। धार्मिक आडंबरों से मुक्त होकर सरल भक्ति करनी चाहिए। इसके माध्यम से ईश्वर को पाया जा सकता है।

**भाषा शैली की विशेषताएँ**

- प्रवाहमयी भाषा
- अलंकारों का सुंदर प्रयोग
- गेयता का गुण विद्यमान
- सरल एवं जनभाषा का प्रयोग

**वाख का उद्देश्य**

- मनुष्य को सच्ची तथा सरल भक्ति का उपदेश देना।
- धार्मिक आडंबरों को समाज से उखाड़ बाहर करना।

**वाख से मिलने वाली शिक्षाएँ / संदेश / प्रेरणा**

- यह पाठ हमें सच्ची और सरल भक्ति करने तथा भक्ति से आडंबरों को दूर करने की सीख देता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in